International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)
E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

उच्च शिक्षा की गिरती साख, तकनीकी एवं प्रबंधन शिक्षा का चरमराता ढॉचा

गोपाल लाल बैरवा

सहायक आचार्य, हिन्दी
राजकीय कन्या महाविद्यालय, नादौती, करौली

विष्व में आर्थिक महाषक्ति बनने एवं डिजिटल होने का सपना देख रहे भारत में उच्च, तकनीकी एंव प्रबंध षिक्षा का ढॉचा चरमराता नजर आ रहा है। उदारीकरण के बाद खास पिछले एक डेढ दषक में देष में तकनीकी एवं प्रबंध षिक्षा संस्थानों की बाढ सी आ गई है। लेकिन षिक्षा की खराब गुणवत्ता और जरूरी बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण अभिभावकों के अरबों रूपये और उनके बच्चों के कैरियर के कुछ कीमती साल इस बाढ में बहते जा रहे है। स्थिति यह है कि मोटी फिस देकर एमबीए या इंजिनियरिंग डिग्री हासिल कर रहे लाखों युवा हर साल बेरोजगारों की कतार में शामिल होते जा रहे है या जीविकोपार्जन की मजबूरी में साधारण नौकरी ज्वाइन कर अर्द्धबेरोजगारी के षिकार हो रहे है।

अभी हाल ही में एसोचैम की ताजा सर्वेक्षण रिर्पोट के अनुसार देष के 20 प्रबन्धन संस्थानों को छोड कर अन्य हजारों संस्थानों से निकले केवल 7 प्रतिषत छात्र ही नौकरी लेने के काबिल होते है। यह चिन्ता का विषय इसलिए भी है क्योंकि स्थिति साल–दर–साल सुधरने की बजाये लगातार खराब होती जा रही है । सन 2007 में किये गये सर्वे में 25 प्रतिषत जबकि 2012 में 21 प्रतिषत एमबीए डिग्रीधारियों को नौकरी देने के काबिल माना गया था। इससे पहले जनवरी 2016 में एस्पाईरिंग माइंड्स की नेषनल इम्प्लायविलिटि रिपोर्ट के अनुसार देष के 20 प्रतिषत इंजिनियरिंग स्नातक ही नौकरी देने के काबिल है जाहिर है एमबीए और बी.टेक जैसे प्रोफेषनल कोर्स भी अब बीए और बीएससी पास कोर्स की तरह अपनी अहमियत खोते जा रहे। आखिर क्यों वद्तर हो रही है स्थिति और क्या हो सकता है इसका समाधान। इन दिनो सात प्रतिषत एमबीए डिग्री धारी युवा जिन्होने देष के 20 शीर्ष प्रबन्धन स्कूलों को छोड कर अन्य संस्थानों से पढाई की है नौकरी के काबिल है। 25 प्रतिषत एमबीए डिग्रीधारियों को 2007 मे जबकि 21 प्रतिषम 2012 में नौकरी के काबिल माना गया। एसोचैम के सर्वे में 5500 के करीब बिजनेस स्कूल है देष में इस समय जिनमें आईआईएम सहित थोडे से संस्थानों से निकले युवाओं को ही नौकरी मिल पा रही है।

दुर्दषा के कारण

1. देष में इंजीनियरिंग और प्रबन्धन कॉलेज है लेकिन उनकी गुणवत्त नहीं बढ रही, न ही इंडस्ट्री की बदलती जरूरतों के मुताबिक उनका पाठ्यक्रम अपग्रेड हो रहा है।

2. जिस हिसाब से नए कॉलेज खुल रहे है उनके लिए योग्य टीचर तक नहीं मिल रहे है, ज्यादातर इंजीनियरिंग कॉलेजो मे ंबी.टेक पास युवा ही नौकरी नहीं मिलने की बजह से पढाने लगते है।

3. विकसित देषों मे कम संस्थानों मे बेहतर सुविधायें मुहैया कराने पर ध्यान दिया जाता है तथा एक ही संस्थान मे हजारों विद्यार्थी षिक्षा ग्रहण करते है जबकि हमारे देष में जरूरी बुनियादी सुविधाओं के बिना भी हजारों कॉलेज चल रहे है जहॉ सिर्फ कुछ सौ या हजार विद्यार्थियों को पढाने की व्यवस्था है।

4. निजी कॉलेजों में प्रोफेषनल कोर्सो की फीस आम भारतीय परिवारों की पहुॅच से बाहर है अकसर पैसे वालो के बच्चे मैरिअ के बिना भी इन कॉलेजों की शोभा बढाते है, गरीब परिवारों के मेधावी बच्चों की पहचान कर उन्हे स्कॉलरषिप देकर अच्छे कॉलेजो में भेजने की कोई व्यवस्था नहीं है।

संस्थानों के उद्देष्य बदलें तो षिक्षा में गुणवत्ता बढें

ऐसोचैम सर्वे रिपोर्ट के अनुसार जिस दर से देष में एमबीए कॉलेज खुले, या लोगों ने एमबीए कॉलेज सिर्फ इसलिए खोले कि इससे उन्हें आर्थिक लाभ हो, जब ऐसे कॉलेजों का उद्देष्य बस इतना हो कि किसी तरह से छात्रों को संस्थान से जोडे रखा जाये जबकि इनमें न अच्छे स्टॉफ है न सुविधाए है न अनुभव है तो जाहिर है कि वहॉ ऐसे ही परिणाम की कल्पना की जा सकती है। जबतक इन कॉलेजों का नियमन–नियंत्रण ठीक से नहीं होगा, तब तक हालात नहीं सुधरेगी। शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता में बृद्वि के लिए पहली जरूरत है कि नियामक संस्थाऍ अपना काम बेहतर ढंग से करें।

नियामक संस्थाओं को दुरूस्त करना पहली जरूरत

प्रबंधन कॉलेजों मे हर साल लाखों बच्चे अरबों रूपये खर्च करने के बाद भी अगर नौकरी के काबिल नहीं हो पा रहे है, तो सरकार को चाहिए कि शैक्षणिक क्षेत्र की ऐसी नियामक संस्थाऍ जो अच्छी तरह से काम नही ंकर रही है उनमें तुरंत हस्तक्षेप करें। हमारे देष में इस वक्त जो पहली जरूरत है, वह है तमाम बडी नियामक संस्थाओं की साख को बनाए रखना।

कौषल विकास की जरूरत

1968 में कहा गया था कि अगले 10 वर्षो में 25 प्रतिषत सैकेन्डरी स्कूलों को वोकेषन स्कूलों में परिवर्तित कर दिया जाएगा। यानि फिजिक्स, कैमेस्ट्री तथा गणित पढने में जिन बच्चों की गहरी रूचि नहीं है वे बच्चे कौषल सीखेगें और काम करने– आत्मनिर्भर होने के लिए तैयार किये जायेंगे। दुर्भाग्य से हम इसमें असफल हो गये है जिसका परिणाम यह हुआ कि बाद के वर्षो में देष में ग्रेजुएट तैयार हए, जो कौषल में बहुत पीछे थे। वर्तमान मे बहुत से ग्रेजुएट्स के पास न तो अपने विषय की जानकारी है, न कौषल है और न ही आत्मविष्वास है, ऐसे में यहॉ स्किल इंडिया कार्यक्रम मददगार हो सकता है जिसके तहत् जिस बच्चे को किस खास कौषल में रूचि हो तो वह आगे बढ सके और

आत्मनिर्भर हो सकें। इसमें मॉ बाप को भी बच्चों पर जोर नहीं देना चाहिए कि वह एमबीए ही करें और बच्चों को भी चाहिए कि वे सिर्फ जॉब के लिए कही भी दाखिला न ले बल्कि रूचि के हिसाब से आगे का रास्ता चुने।

शिक्षा की गुणवत्ता पर फोकस नहीं

कुल मिलाकर उच्च तकनीकी एवं प्रबन्धन के क्षेत्रों में काबिलियत के स्तर के गिरने के बुनियादी कारण यह है कि संस्थान खोले जाने का उद्देष्य षिक्षा की गुणवत्ता नहीं बल्कि आर्थिक लाभ हो गया है। गांधी जी ने कहा था कि हमारी प्रकृति में सबकी आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए संसाधन मौजूद है लेकिन किसी एक की लालच की पूर्ति के लिए नहीं है। एक बडे विभाग में उच्च पद पर अगर एक व्यक्ति लालची हो जाता है तो उस विभाग की सारी व्यवस्था भ्रष्ट हो जाती है कुछ यही बात प्रबन्ध संस्थानों पर लागू होती है क्योंकि वे सिर्फ आर्थिक लाभ के बारे मे ध्यान देते है षिक्षा की गुणवत्त के बारे मे नहीं।

मंदी के दौर में अदूरदर्षिता के बिगडे हालात।

तकनीकी एवं प्रोफेषनल षिक्षा में 1990 से 2007 के बीच नए संस्थानों मांग बहुत तेजी से बढी। इसका उदारीकरण मुख्य कारण था भारत सरकार की आर्थिक उदारीकरण की नीति जिसमें प्राईवेट सेक्टर को तकनीकी षिक्षा में खुली छूट दी गयी ताकि सरकार को अपनी जिम्मेदारी से मुक्ति मिल सकें। उदारीकरण के शुआती 15 वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी का दौर था और कंपनियां बिजनेस स्कूलों में जब नौकरियां बांट रही थी। 2007 के बाद अमेरिका व यूरोपीय अर्थव्यवस्था में आयी बेहताषा मंदी ने भारतीय अर्थव्यवस्था को भी जकड लिया। 2008 से 2014 के बीच में भारतीय व विदेषी कंपनियों ने बिजनेस स्कूलों में आंख मूंदकर नौकरियां बांटना कम कर दिया। विष्वव्यापी मंदी का सबसे ज्यादा प्रभाव आईटी कंपनियों पर पडा।

मॉग और पूर्ति में संतुलन जरूरीः

आज उच्च षिक्षा में हर जगह भ्रष्टाचार, कुषासन और राजनीतिक हस्तक्षेप दिखाई देता है। एमबीए संस्थानों को मान्यता एआईटीइ देती है ओर यह संस्था भी भूतकाल में उससे अछूती नहीं रही है। एमबीए में प्रवेष इच्छुक अभ्यर्थियों और रोजगार देने वाली कम्पनियां के लिए यह मुष्किल होता है कि अच्छे और खराब प्रबंध संस्थानों की पहचान कैसे की जाए।

आज यूजीसी और एआसीटीई से यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि क्या उनके पास एमबीए डिग्रीधारियों की वर्तमान और भावी मांग के संबंध में कोई तथ्यपरक व विष्वसनीय आंकडा है।

क्या भविष्य में नए संस्थान, कॉलेज व यूनिवर्सिटियां खोलते समय यह ध्यान रखा जाएगा कि एमबीए, इंजीनियरिंग फार्मेसी, मेडिकल एवं डेन्टल षिक्षा के कोर्सो की मांग और पूर्ति में संतुलन बना रहे। यह कार्य अगर मानव संसाथन विकास मंत्रालय, यूजीसी, एआईसीटीई, एमसीआई, डीसीआई आदि नहीं करेगें तो कौन करेगा।

हमें लगता है एमबीए पिछले कुछ दषकों में दुनिया भर में सर्वाधिक लोकप्रिय पाठ्यक्रम रहा है और आने वाले समय में भी इसकी चमक कायम रहेगी, लेकिन भारत के संदर्भ में यह ध्यान रखना होगा कि हर पीली और चमकदार वस्तु सोना नहीं होती तथा किसी चालू मार्का प्रबंध संस्थान से एमबीए करने से कुछ हासिल होने वाला नहीं है। इसलिए एमबीए कोर्स में एडमिषन का विचार रखने वाले भारतीय युवाओं को इस मृगमरीचिका से बचना चाहिए।

प्रतिक्रियादेंसंदर्भ

1. अग्रवालए पीण ;2006द्धण उच्चशिक्षाभारतमेंरू बदलावकीजरूरत ;कार्यपत्रसंण180द्धए
2. भारतीयअंतर्राष्ट्रीयआर्थिकसंबंधअनुसंधानपरिषद ;आईसीआरआईईआरद्धए नईदिल्ली। 2णअनबालागनए सी। ;2011द्धण चुनौतियांऔरसंभावनाएँकाभारतीयउच्चशिक्षात्मकसेवाएंए वैश्विकदेखना।अंतरराष्ट्रीयपत्रिकाकाअनुसंधानमेंएमप्रबंधनऔरतकनीकीए 1;2द्धए 78.86ण 22 अगस्त 2014 कोयहांसेप्राप्तरू ूणपतंबेजणवतहध्परतउजध्चंचमतेध्टवससदव22011ध्4अवससदव2णचकि
3. चहलए एन।एकडीएच।डार ;2015द्धण नमस्तेघेरशिक्षाक्षेत्रमेंभारतरू चुनौतियांहेएफसुस्ताअसमर्थता णइंटरनेशनलजर्नलऑफमैनेजमेंटरिसर्चएंडरिव्यूए 5 ; 3 द्धए 159 169ण
चक्रवर्तीए केसी ;2011ए अगस्तद्ध।भारतीयशिक्षासिस्टम . मुद्देऔरचुनौतियाँण पतादियागयापरजेआरईविद्यालयकाएमप्रबंधनए ग्रेटरनोईदाए ऊपरपुनःप्राप्तअगस्त 24श 2014 एफत्व्ड ूणइपेणवतहध्तमअपमूध्त110809इणचकि
5ण दासए एस। ;2007द्धण जीम उच्चशिक्षामेंभारतऔर जीम चुनौतीकावैश्वीकरणए सामाजिकवैज्ञानिकए 35 ;३ध्४द्धए मार्चअप्रैल ७ 2007ए पीपी 47.67 पुनःप्राप्तअगस्त 25 2014 से ीजजचरूध्ूरेजवतणवतहध्जंइसमध276442051
6ण गुप्ताए डीण औरगुप्ताए एन। ;2012द्ध उच्चशिक्षाभारतरू स्ट्रसंस्कृतिए सांख्यिकीऔरचुनौतियाँण पत्रिकाकाशिक्षाऔरअभ्यासए 3 ; 2 द्धए 17.24 पुनःप्राप्तअगस्त 24 2014 इधर.उधरएम ीजजचरूध्ूणपपेजमणवतहध्श्रवनतदंसेध्पदकमगण्चीचध्श्रम्ध्ंतजपबसमध्अपमूथ्पसमध1146ध10671
7ण हैदरए एस।जेड;2008द्धण चुनौतियांमेंउच्चशिक्षाकार्यरू विशेषसंदर्भटीहेपाकिस्तानऔरदक्षिणएचएशियाईविकासशीलदेशअर्थातण निष्पक्षीयशिक्षासमीक्षाए 4;2द्धए 1.12ण रेट्रीईवेदअगस्त 24७ 2014 दचमणमकनबंजपवददमूणवतहध्त्मअपमूध्ेंलेध्अ4द2णीजउस से।